

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट, स्तुति पुस्तक II, सत्र 1

विहित प्रसंग

© 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट है जो स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र संख्या एक है, स्तोत्र की पुस्तक दो का विहित संदर्भ।

शुभ दोपहर। हम स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर व्याख्यानों की एक लघु-श्रृंखला की खोज कर रहे हैं। यह मूल रूप से भजन 42 से भजन 72 तक है। यह एक लेख का विस्तार है जो मैंने क्रिएगेल के लिए लिखा है जिसे 2018 में द बाइबिलिकल फाउंडेशन ऑफ वर्शिप के नाम से प्रकाशित किया जाएगा।

हमसे जुड़ने के लिए धन्यवाद. परिचय के तौर पर, मैं इसे आगे-पीछे बहुत कुछ पढ़ंगा क्योंकि यह पुस्तक के लेख से आया है। हम एक इकाई के रूप में इसकी विशेषताओं और प्रवाह के संदर्भ में पुस्तक दो के विहित संदर्भ के विवरण से शुरुआत करते हैं।

आगे, हम भजन संहिता की पुस्तक के तीन मुख्य पात्रों, राजा, भजनकार और शत्रु की जाँच करेंगे। विश्वासघाती शत्रु भजनकार को चिढ़ाता है, लज्जित करता है, और फँसाना, निगल जाना और नष्ट करना चाहता है। भजनहार मुक्ति और सुरक्षा की दुहाई देता है।

दैवीय या मानवीय राजा बचाव करता है, सुरक्षा करता है और न्याय प्रदान करता है। इसके बाद भजनहार दिव्य राजा की स्तुति करता है। पुस्तक दो के सांस्कृतिक संदर्भ की भी एक ऐसे संदर्भ के रूप में जांच की जाएगी जिसमें मंदिर में उत्सव मण्डली के बीच बलिदानों और संगीत के माध्यम से भगवान की स्तुति व्यक्त की जाती है।

फिर हम प्रदर्शित करेंगे कि विलाप अक्सर प्रशंसा का आधार होता है और यहाँ तक कि निंदा भी अक्सर प्रशंसा से जुड़ी होती है। इसके बाद, प्रशंसा के आह्वान, प्रशंसा करने का कारण, प्रशंसा कैसे करें और प्रशंसा के स्थान पर चर्चा में स्वयं प्रशंसाओं की जांच की जाएगी। अंत में, ये प्रस्तुतियाँ आधुनिक पूजा और स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति के कुछ निहितार्थों के साथ समाप्त होंगी।

और अब यहाँ परिचय है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, मुझे बटन दबाते रहना चाहिए था, लेकिन हम पुस्तक के विहित संदर्भ के बारे में बात करेंगे। यह आज के लिए हमारी लघु प्रस्तुति है।

फिर अगली बार हम तीन मुख्य पात्रों, राजा, भजनहार और शत्रु पर जायेंगे। स्तोत्र का सांस्कृतिक संदर्भ और विशेष रूप से हम इसे स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में देखेंगे। हम प्रशंसा का आधार विलाप करेंगे।

फिर हम प्रशंसा के आधार के रूप में उस निंदा का भी सुझाव देंगे। फिर जब हम ऐसा करेंगे, तब हम वास्तव में स्वयं प्रशंसा, प्रशंसा करने का आह्वान, प्रशंसा करने का कारण, प्रशंसा कैसे करें

और प्रशंसा के स्थान को देखेंगे। और फिर अंततः, हमारी सातवीं प्रस्तुति आधुनिक पूजा के निहितार्थ होगी।

तो ये सिर्फ परिचय के तौर पर हैं। और फिर हम अब स्तोत्र की दूसरी पुस्तक के विहित संदर्भ के बारे में बात करना चाहते हैं। भजन संहिता की पुस्तक के हिब्रू शीर्षक को तहिलीम कहा जाता है, जिसका सीधा सा अर्थ है प्रशंसा।

और आप इस शब्द से पहले से ही परिचित हैं क्योंकि यह हलल नामक धातु से बना है, जो एक ऐसा शब्द है जिसे हमने कई बार सुना है। हललुजाह। और इसलिए यह याह की स्तुति है या प्रभु की स्तुति है।

स्तोत्र की पुस्तक पांच पुस्तकों में विभाजित होने के कारण टोरा या पेंटाटेच के समानांतर है। और इसलिए, ये पुस्तकें, यदि आप इसे देखें, तो हम देख सकते हैं कि इनमें से पहली पुस्तक भजन अध्याय एक से 41 तक है, जो मुख्य रूप से डेविडिक भजन है। पुस्तक दो, डेविड का दूसरा संग्रह, भजन 42 से भजन 72 तक।

तीसरी किताब भजन 73 से भजन 89 तक और चौथी किताब 90 से 106 तक है। और अंत में किताब पांच, भजन 107 से भजन 150 तक है। प्रत्येक किताब को प्रशंसा के समापन चिह्नों और फिर एक दोहरे आमीन के साथ चिह्नित किया गया है।

और इसलिए, इस तरह हम जानते हैं कि किताब किस इकाई में रुकी है और आगे बढ़ी है। प्रत्येक पुस्तक के निम्नलिखित समापन छंदों की तुलना करें। और इसलिए, मैंने जो किया है वह यह है कि मैंने प्रत्येक समापन छंद को खींच लिया है।

तो यहाँ, उदाहरण के लिए, पुस्तक एक का अंत है और यह अध्याय 40 श्लोक 13 है। इसमें कहा गया है, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की अनादिकाल से अनन्त तक स्तुति होती रहे। आमीन और आमीन।

और इस तरह पहली पुस्तक समाप्त होती है। और इसलिए, आप देख सकते हैं कि यदि आप पुस्तक दो को रखते हैं, तो पुस्तक संख्या 72 श्लोक 20 में समाप्त होती है और यह कहती है, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति करो, जो अकेला अद्भुत काम करता है। स्तुति करो, और तुम्हें एक और प्रशंसा मिल जाएगी।

तो, यहाँ वास्तव में दोहरी प्रशंसा है। उसके महिमामय नाम का सदा स्मरण रखो। सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भर जाए।

आमीन और आमीन। और फिर वास्तव में भजन 72.20 वास्तव में इसी के साथ समाप्त होता है। इससे यिश्शै के पुत्र दाऊद की प्रार्थना समाप्त होती है।

और इसी तरह से दूसरी पुस्तक का अंत होता है, वहाँ बहुत स्पष्ट अंत होता है। इससे दाऊद की प्रार्थना समाप्त होती है। पुस्तक तीन, इसी तरह, आपको भजन 89 पद 52 में अंत मिला है।

प्रभु की सदा स्तुति करो। आमीन और आमीन. तो वह एक दोहरे आमीन और एक प्रशंसा के साथ समाप्त होता है।

पुस्तक चार, समान, अध्याय 106 श्लोक 48, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की अनादिकाल से अनन्त तक स्तुति होती रहे। सब लोग कहें, आमीन। प्रभु की स्तुति।

और इसलिए, आपको वहां एक भी आमीन मिलता है। और फिर अंत में, पुस्तक पाँचवीं का अंत भजन 150 में है, जो अंतिम भजन है। और भजन 150 में प्रभु की स्तुति का सार है, प्रभु की स्तुति करो, प्रभु की स्तुति करो।

और फिर अंत में क्या होता है कि आपको पूरे स्तोत्र का अंतिम शब्द प्रभु की स्तुति है या हल्लेलुयाह स्तोत्र की पुस्तक का अंतिम शब्द है। यह अध्ययन भजन संहिता की पुस्तक दो, भजन 42 से लेकर भजन 72 तक में भगवान की पूजा की विशेषताओं और विशिष्टता की जांच करेगा। इसलिए, हम केवल पुस्तक दो को देख रहे होंगे।

वैसे, ये किताबें मोज़ेक कानून के समानांतर हैं। तो, टोरा की पाँच पुस्तकें हैं। और इसलिए यहां हमारे पास भजनों के समानांतर पांच पुस्तकें हैं।

भजनों को फिर से दाऊद के भजनों के साथ विकसित किया गया। डेविड का लगभग एक हजार ईसा पूर्व और अंतिम भजन निर्वासन या निर्वासन के बाद 586 या उसके आसपास या 586 के थोड़ा बाद होने वाला है। इसलिए भजन की पुस्तक लगभग 400 वर्षों की अवधि में एक साथ रखी गई थी।

और इसलिए हम पुस्तक दो की विशेषताओं को देखने जा रहे हैं, लेकिन मोटे तौर पर मोज़ेक पेंटाटेच की पाँच पुस्तकें हैं। और फिर भजन की पाँच पुस्तकों की प्रतिक्रिया आई। पहली पुस्तक में डेविडिक शीर्षक हावी हैं।

और इसलिए हमारे पास अध्याय तीन से 41 तक के शीर्षक बड़े पैमाने पर डेविडिक शीर्षक हैं। इसे प्रथम डेविडिक संग्रह कहा जाता है। हालाँकि, दूसरे डेविडिक संग्रह वाली पुस्तक दो में थोड़ी अधिक विविधता है और वह अध्याय 50 से 70 तक है।

लेकिन दूसरी पुस्तक में, पहले अध्याय 42 से 49 में, हमारे पास कोरह के पुत्र हैं। और कोरह के ये पुत्र 16 की संख्या में पाए जाते हैं जहाँ ज़मीन खुलती है और कोरह को निगल जाती है। लेकिन फिर जाहिरा तौर पर, बाद में, वे पुरोहित लोग थे जो वहां कुछ भजन प्रकार की पूजा, सांस्कृतिक पूजा में शामिल थे।

तो, भजन 42 और 43 जुड़े हुए हैं। 43 वास्तव में एक अनाथ स्तोत्र है। और अनाथ भजन क्या है? अनाथ स्तोत्र एक ऐसा स्तोत्र है जिसका कोई शीर्षक नहीं है।

और शुरुआती जोड़ी में, भजन जोड़ी, परहेज़, मेरी आत्मा तुम उदास क्यों हो? तुम मेरे भीतर इतने व्याकुल क्यों हो? अपनी आशा परमेश्वर पर रखो क्योंकि मैं अब भी अपने उद्धारकर्ता और अपने परमेश्वर की स्तुति करूंगा। और यह खंडन कि तुम मेरी आत्मा को निराश क्यों कर रहे हो, अध्याय 42, श्लोक 5, अध्याय 42:11 में पाया जाता है, और 43:5 में भी अध्याय 42 और 43 को जोड़ा जाता है जिसे मैं एक भजन जोड़ी कहूंगा। इस प्रकार 42 और 43 उन जोड़ियों के समान एक भजन युग्म बनाते हैं जो भजन अध्याय 1 और 2 या भजन अध्याय 9 से 10 में पाए जाते हैं।

भजन 42 से 43, 44 और 45 में सभी मास्किल्स का लेबल दिया गया है। और इसलिए, 42, 43, 44, और 45 सभी मास्किल या निर्देशात्मक भजन हैं। भजन 42, 43 से 49 तक सभी में संगीत निर्देशक का शीर्षक है।

और इसलिए, ये शीर्षक इन्हें मूल रूप से 42 से 49 तक जोड़ते हैं। भजन 50 में आसफ का एक भजन है जो संभवतः आसफ संग्रह से आगे बढ़ाया गया है। आसाप का संग्रह भजन 73 से 83 तक है।

तो भजन 50 को इस तरह से आसाप संग्रह से दूर क्यों खींचा गया है, जबकि यह एक आसफ भजन है? इसका मुख्य कारण पुस्तक दो में आसन्न भजन 51 के साथ इसका विषयगत संबंध है। भजन 50 में, भगवान को उनके बलिदानों की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह एक हजार पहाड़ियों पर मवेशियों का मालिक है। भजन 51 में, डेविड एक टूटे हुए और निराश हृदय का अच्छा बलिदान देता है।

और इसलिए भजन 50 और भजन 51 के बीच विभिन्न बलिदानों के बीच एक विरोधाभास है जहां डेविड एक अच्छा बलिदान देता है, जो एक टूटा हुआ और पछतावा दिल है। भजन 51 से 70 को दूसरा डेविडिक संग्रह कहा जाता है। तो मुझे देखने दो कि क्या मुझे वह मिल गया है।

हमें संगीत निर्देशक के लिए मास्किल मिल गया है और हमें शायद वापस जाकर इसे देखना चाहिए। मुझे खेद है, मुझे बटन दबाना चाहिए। लेकिन मोटे तौर पर आसफ भजन 50 एक आसफ भजन है जिसे भजन 51 से जुड़े होने के कारण आगे बढ़ाया गया है।

भजन 50 बहुत प्रसिद्ध भजन है कि वह एक हजार पहाड़ियों पर मवेशियों का मालिक है। और इसे मोटे तौर पर इस सन्दर्भ में रखा गया है कि मूलतः ईश्वर को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। उसे आपके भोजन की आवश्यकता नहीं है।

मुझे भोजन के रूप में आपके बलिदान की आवश्यकता नहीं है। यदि मुझे भोजन चाहिए, तो मुझे मिल गया है, मेरे पास हजारों पहाड़ियों पर मवेशी हैं। डेविड फिर कहता है कि इस तरह आप एक अच्छा बलिदान देते हैं।

और इसलिए हम उसी स्थिति में हैं। अब, डेविड एक अच्छा बलिदान और भजन 51 से 70 पेश करता है। आइए देखें कि क्या मुझे यह मिल गया है।

हाँ, यह वहाँ है। भजन 51 से 70 तक। हमें दूसरा मिल गया है, जिसे दूसरा डेविडिक संग्रह कहा जाता है।

और फिर, 51 से 62 और 64 से 70 में संगीत निर्देशक एक शीर्षक के रूप में प्रमुख है। भजन 71 एक अनाथ भजन है। और यह मूल रूप से एक प्रार्थना है कि डेविड को बुढ़ापे में त्याग न दिया जाए।

और फिर भजन 72, यह काफी दिलचस्प है। आइए मैं यहाँ नोट्स पर वापस जाता हूँ। पुस्तक दो का समापन दाऊद के पुत्र राजा सुलैमान के एक भजन और कथन के साथ होता है, यह यिश्शै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाओं का समापन करता है।

भजन 71 में आपके पास मूल रूप से डेविड है, जो इस समय एक कमजोर बूढ़ा व्यक्ति है और कह रहा है, हे प्रभु, मुझे बुढ़ापे में मत छोड़ो। और फिर भजन 71 और भजन 72 के बीच जो प्रतिक्रिया होती है वह काफी हद तक सुलैमान भजन 72 में राजा सुलैमान के साथ उठाती है। तो, यहाँ भजन 71 और भजन 72 के बीच एक समान आंदोलन है।

और इसलिए मूल रूप से आपको जो मिला है वह पहला राजा और पहला राजा है जहाँ भगवान कमजोरी और उसके बारे में बात करते हैं। तो, आप शायद, भजन 71 के बीच उस संबंध पर ध्यान देना चाहेंगे जहाँ डेविड कमजोर है और भगवान से प्रार्थना कर रहा है कि भगवान उसे न छोड़े, और भजन 72 जहाँ सुलैमान फिर ताकत हासिल करता है और न्याय के लिए बाहर जाता है और एक राजा के रूप में शासन करता है। बहुत, 1 किंग्स 1 के समान जहाँ डेविड कमजोर है और वह अबीशग है और वह सारी स्थिति घटित हो रही है।

और फिर सुलैमान 1 राजा के अध्याय दो और तीन को लेता है। तो, पुस्तक तीन में आसफ के स्तोत्र और इसके अध्याय 73 से 83 शामिल हैं। और आगे मैं क्या देखना चाहता हूँ, और इसे एलोहिस्टिक स्तोत्र कहा जाता है।

एलोहिस्टिक स्तोत्र भजन 42 से लेकर भजन 83 तक है। यह पदनाम दिव्य नाम यहोवा के कम उपयोग के अवलोकन से पैदा हुआ है। इसीलिए इसे एलोहिस्टिक स्तोत्र कहा जाता है क्योंकि पुस्तक दो में यहोवा केवल 27 बार आया है।

यहोवा का अनुवाद भगवान, पूंजी एल, पूंजी ओ, पूंजी आर, पूंजी डी किया जाता है। एलोहिम के उपयोग में वृद्धि, एलोहिम का अनुवाद भगवान को 131 बार किया गया है। तो, आपके पास 27 गुना यहोवा है, जो भजन संहिता में बहुत कम है, 131 तक, जो भजन की पुस्तक में बहुत बड़ा है। एलोहिस्टिक स्तोत्र भजन 42 से 83 तक है।

यह शेष स्तोत्र में यहोवा और एलोहिम के पाँच-से-एक अनुपात के विपरीत है। दूसरे शब्दों में, शेष स्तोत्र में, यहोवा का प्रयोग पाँच बार किया गया है, और एलोहिम, ईश्वर का प्रयोग एलोहिम के लिए हर पाँच बार में केवल एक बार किया गया है। तो, यह इस बारे में है कि यहोवा ने 260 बार प्रयोग किया जबकि एलोहिम ने लगभग 56 बार प्रयोग किया।

वहाँ एक चार्ट है कि मैं यह करना चाहता हूँ और इसके लिए एक प्रकार का स्वाद प्राप्त करना चाहता हूँ। यहां पुस्तकें एक, चार, और पांच छह से एक के बारे में यहोवा का पक्ष लेती हैं। और फिर पुस्तकें दो और तीन लगभग छह से एक तक एलोहीम का पक्ष लेती हैं।

तो, एक स्पष्ट अंतर है और इसीलिए इसे एलोहिस्टिक साल्टर कहा जाता है क्योंकि इस पुस्तक में एलोहिम नाम दर्शाया गया है। अब मैं एक चार्ट लगाना चाहता हूँ जो इसे बनाता है, यह एक ग्राफ है जो इसे वास्तव में स्पष्ट करता है, और फिर बस इसके बारे में बात करता हूँ। तो आपके पास पुस्तक एक है, पुस्तक एक है, यहोवा का उपयोग लगभग 85 बार है।

यहोवा के प्रयोग का अनुवाद प्रभु किया गया है। एलोहिम का प्रयोग केवल 15 बार होता है। यहाँ पुस्तक चार में, यहोवा का उपयोग 86 बार किया गया है, और एलोहीम, ईश्वर, का उपयोग केवल 14 बार किया गया है।

में, यहोवा का प्रयोग 89 बार और एलोहिम का प्रयोग केवल 11 बार किया गया है। अब विरोधाभास देखिए. तो, पुस्तकों एक, चार और पाँच में, याहवे का मुख्य रूप से छह से एक का उपयोग किया गया है।

लेकिन पुस्तक दो में, जहाँ हम हैं, ध्यान दें कि याह्वे का उपयोग केवल 14 बार किया गया है और एलोहीम का उपयोग 86 बार किया गया है। भाग पुस्तक तीन की पुस्तक ए के साथ भी यही बात है, इसका उपयोग यहोवा के लिए 13 बार और एलोहिम के लिए 45 बार किया गया है। और इसलिए, आप इन दोनों खंडों को देख सकते हैं कि उन्होंने इन्हें एक साथ क्यों रखा और इसे एलोहिस्टिक क्यों कहा।

एलोहीम, ईश्वर, एलोहीम, ईश्वर नाम का प्रयोग मुख्य रूप से पुस्तक दो और पुस्तक तीन के पहले भाग में किया गया है। और पुस्तक तीन का दूसरा भाग इसे दूसरे तरीके से पलट देता है, दो से एक, 31 से 16, यहोवा 31, एलोहीम 16। और इसलिए यह मूल रूप से केवल एलोहिस्टिक स्तोत्र और एलोहीम पर अत्यधिक जोर का वर्णन है।

हम पुस्तक दो में यह देखने जा रहे हैं कि हम कहाँ हैं। अब इसका एक और सबूत सामने आया है. और मैं बस इसे सामने लाना चाहता हूँ।

भजनों में हमारे पास जो कुछ है वह समानांतर, लगभग समान भजन, भजन 14 और भजन 53 है। वे लगभग समान भजन हैं, शब्द दर शब्द, समान। भजन 14 और भजन 53.

भजन 14 पुस्तक एक में है, भजन 53 पुस्तक दो में है। इसलिए, मैं यह देखने के लिए दोनों भजनों की तुलना करना चाहता हूँ कि क्या कुछ बदलाव हुए हैं। और वास्तव में हमने पाया कि वहाँ स्विच बने हुए हैं।

और इसलिए, इसमें मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें इसके माध्यम से ले चलूँगा। तो, हमें भजन 53 की तुलना में भजन 14 मिला है।

अब भजन 53 एलोहिस्टिक स्तोत्र में है और भजन 14 पहली किताब में है। तो यह यहोवा के पक्ष में होगा। और इसलिए, आपके पास जो है वह कहता है, प्रभु स्वर्ग से नीचे देखते हैं।

यहाँ का प्रभु यहोवा होगा। हम यहोवा शब्द का अनुवाद प्रभु में करते हैं। अब जब आप अध्याय 53 पर आते हैं, तो यह कहता है, यह बिल्कुल वही श्लोक है।

यह कहता है, कि ईश्वर या एलोहीम स्वर्ग से नीचे देखता है। तो, आप देख सकते हैं कि इन दो छंदों में, जो बिल्कुल समानांतर हैं, याहवे नाम से एलोहिम, ईश्वर नाम में बहुत स्पष्ट बदलाव हुआ है। तो ऐसी ही बात यहाँ श्लोक 14 में घटित होती है।

और कौन प्रभु को नहीं पुकारता? और फिर जब आप भजन 53 में देखते हैं, तो यह कहता है, कौन परमेश्वर (एलोहीम) को नहीं पुकारता? तो फिर, आप देखते हैं कि यहोवा का उपयोग यहाँ भगवान के लिए किया जाता है और यहाँ एलोहीम का उपयोग भगवान के लिए किया जाता है। तो, आप देखते हैं कि भजन 53 सुसंगत है। यह आकस्मिक नहीं है।

यह इस बात में सुसंगत है कि इन चीजों को कैसे स्थानांतरित किया जाता है। 14:7 में भी यही बात है। वैसे, आप लोग जानते होंगे कि भजन 14, और भजन 53 में मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई ईश्वर नहीं है। यह भजन 14 और 53 दोनों में है।

मूर्ख ने अपने मन में कहा, कोई परमेश्वर नहीं है। तो यहाँ जब प्रभु अपने लोगों के किले को पुनर्स्थापित करता है, तो आप देख सकते हैं कि यह यहोवा है। और आप क्या उम्मीद करेंगे? बस यहाँ पर अनुमान लगाओ।

आप उम्मीद करेंगे कि एलोहीम परमेश्वर अपने लोगों का भाग्य बहाल करेगा। और इसलिए, आप भजन देखते हैं जो एक दूसरे के बिल्कुल समानांतर है। और आप देखते हैं कि यह पहली पुस्तक में यहोवा से दूसरी पुस्तक में ईश्वर, एलोहीम तक कितनी लगातार चलती है।

और इसीलिए इसे एलोहिस्टिक स्तोत्र कहा जाता है। और यह एक आकर्षक चीज़ है। हम दूसरी किताब देख रहे हैं।

और इसलिए यह उस पुस्तक की विशेषताओं में से एक है। अब हम एक और चाहते हैं, मैं केवल पुस्तक एक या पुस्तक दो के प्रवाह का रेखाचित्र बनाने जा रहा हूँ। पुस्तक दो में विहित संदर्भ का एक और आकार इस प्रकार शिथिल रूप से चित्रित किया जा सकता है।

भजन 42 और भजन 43 पुस्तक दो का परिचय है। तो, भजन 42 और 43 में, हमने कहा कि 43 एक अनाथ भजन था। वे दो स्तोत्र परहेजों के कारण एक साथ मिलकर एक जोड़ी में बदल जाते हैं।

उन दोनों स्तोत्रों में परहेज बिल्कुल एक जैसे हैं। और इस प्रकार वे दोनों एक जोड़ी बन जाते हैं। और फिर वे यहां जो प्रश्न पूछ रहे हैं वह भगवान के साथ रहने की इच्छा व्यक्त करना है जैसे हिरण पानी के बाद हांफता है।

तो, हे भगवान, मेरी आत्मा तुम्हारे पीछे हांफ रही है, ऐसी बात है। वह उत्सव की भीड़ में जुलूस में भगवान के लोगों को याद करता है। लेकिन अब भजनहार को उत्तर में माउंट हर्मन के नीचे निर्वासन और अराजक जल का सामना करना पड़ता है, 42:6, और दो बार ताने मारे जाने और प्रश्न से परेशान होने के कारण वह भगवान के मंदिर की स्लैश वेदी से कट गया है।

और यह 42 और 43 से सामने आने वाला प्रमुख प्रश्न है। वह दुश्मन द्वारा ताना मारा जाता है। तुम्हारे भगवन कहा हैं? और फिर 42 और 43 में, उसकी आत्मा परमेश्वर के पीछे छटपटाती है, लेकिन फिर भी वह उत्तर में, हर्मन पर्वत के नीचे है और उसका दुश्मन उसे ताना मारता है।

और ये बयान उन्हें परेशान भी करता है। तुम्हारे भगवन कहा हैं? भजनकार उस वेदी पर लौटने की आशा करता है जहां भगवान, जहां भजनकार एक बार फिर भगवान के घर में वीणा के साथ भगवान की स्तुति कर सकता है। भजन 43.4. वह आशा भजनहार के तीन बार दोहराए गए उद्धरण, उद्धरण का मार्गदर्शन और समर्थन करती है, क्योंकि मैं अभी भी उसकी प्रशंसा करूंगा।

मैं फिर भी उसकी प्रशंसा करूंगा। भजन 42:5, 11, और 43:5 छंद पांच में हर बार परहेज को लगभग छह छंदों द्वारा अलग किया जाता है, जो इन दो भजन, 42 और 43 को एक जोड़ी में बांधता है, यहां तक कि भजन 1 और भजन 2 के रूप में भी। एक परिचयात्मक भजन जोड़ी में बंधे थे। तो, भजन 1 और 2 ने पुस्तक 1 का परिचय दिया और वास्तव में भजन 1 और 2 ने संपूर्ण भजन का परिचय दिया।

लेकिन 42 और 43 ने पुस्तक 2 को उसी तरह की जोड़ी तकनीक के साथ पेश किया जिसका उपयोग 1 और 2 में किया गया था। और भजन 9 और 10 भी एक जोड़ी में एक साथ बंधे हैं। भजन 44 अनुसरण करता है और हम इसे भजन 44 के साथ लेना चाहते हैं, जो भजन दोहे 42.3, 43 की व्यक्तिगत याचिका या विलाप का अनुसरण करता है, जिसमें सामुदायिक याचिका एक, उद्धरण, मैं, मैं, मेरा से हम, हम, हमारा तक चलती है। तो, एक व्यक्तिगत है, 42, 43 व्यक्तिगत विलाप है।

और फिर 44 में आपके पास जो है उसे सांप्रदायिक विलाप कहा जाता है। हम, हम, हमारे, प्रथम-व्यक्ति एकवचन के बजाय प्रथम-व्यक्ति बहुवचन, क्योंकि वे ईश्वरीय समर्थन की अस्वीकृति और अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप अपने दुश्मनों के सामने हार का शोक मनाते हैं। तो, भजन 42 में, हम प्रथम व्यक्ति शैली में पढ़ते हैं।

मुझे देखने दो कि क्या मुझे यह मिल गया है। हाँ, 42 हम पढ़ते हैं, मेरी आत्मा तुम निराश क्यों हो ? मैं ईश्वर से कहता हूँ, हे मेरी चट्टान, पहले व्यक्ति पर ध्यान दे, मैं, मेरी, मैं ईश्वर से कहता हूँ, हे मेरी चट्टान, तू मुझे क्यों भूल गया? प्रथम व्यक्ति एकवचन. भजन 44 में प्रथम-पुरुष बहुवचन, हम, हम, हमारे की ओर एक महत्वपूर्ण आंदोलन है।

और इसलिथे हम ने वहां पढ़ा है, हम ने आपके कानोंसे सुना है, हे परमेश्वर, हमारे पुरखाओंने हम से कहा है, हमारे मन फिर नहीं गए। हमारे पैर तेरे मार्ग से नहीं भटके थे, परन्तु तू ने हम को कुचल डाला, और गीदड़ों का अड्डा बना दिया। तू ने हमें गहरे अन्धकार से ढांप दिया।

तो, इसे सांप्रदायिक विलाप कहा जाता है क्योंकि यह मैं, मैं के बजाय, हम, हमारे, हम की तरह होता है। इसके बाद भजन 45 मूल रूप से राजा के आनंदमय विवाह और भजन 45 में राजा की प्रशंसा की ओर बढ़ता है। अब, किताब दो में जो लड़का पेश किया गया है, उसमें से एक बड़ा सवाल यह है कि वह इस सवाल से परेशान है, दुश्मन उसे परेशान करता है।

तुम्हारे भगवन कहा हैं? तो 46 से 48 में, यह बदल जाता है और फिर यह सिय्योन में स्थानांतरित हो जाता है, वह स्थान जहां भगवान रहते हैं। तो तुम्हारा भगवान कहाँ है? अब 46 से 48 पारियों में उनका उत्तर है कि तुम्हारा भगवान कहाँ है? परमेश्वर के शहर सिय्योन की प्रस्तुति, अध्याय 46, श्लोक चार, अध्याय 48, श्लोक एक, दो, और आठ उद्धरण के रूप में, वह पवित्र स्थान जहां परमप्रधान निवास करता है। भगवान उसके भीतर है।

भगवान किसके भीतर है? सिय्योन के भीतर. और इसलिए, यह अध्याय 46 श्लोक चार और पांच है। परमेश्वर राष्ट्रों पर शासन करता है।

इसलिए, वह सिय्योन तक ही सीमित नहीं है। वह राष्ट्रों पर शासन करता है। और इसलिए, 47 प्रकार में थोड़ा सा सुधार है।

46, परमेश्वर सिय्योन में शासन करता है और 47 मूलतः यह है कि परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर शासन करेगा। और इस प्रकार सिय्योन से, परमेश्वर की आराधना और परमेश्वर का उत्कर्ष, सिय्योन से पृथ्वी के छोर तक चला जाता है। अपनी उपस्थिति को अपने पवित्र पर्वत, सिय्योन पर्वत पर केंद्रित करते हुए, अध्याय 48, पद दो में इसे महान राजा का शहर, उद्धरण कहा गया है।

तो, भजन 48 उन महान भजनों में से एक है। यदि आप कभी यरूशलेम में रहे हैं, तो भजन 48 यरूशलेम और सिय्योन और वहां केंद्रित भगवान की पूजा के बारे में एक महान भजन है। 46 दिव्य कथन के साथ समाप्त होता है, मुझे राष्ट्रों के बीच ऊंचा किया जाएगा, जो 47 में भजनकार की अंतिम प्रतिक्रिया में गूँजता है।

तो, 46 47 से जुड़ा है। 46 के अंत में, भगवान कहते हैं, मैं राष्ट्रों के बीच ऊंचा हो जाऊंगा। अध्याय 47 कहता है कि पृथ्वी के राजा परमेश्वर के हैं।

वह बहुत ऊँचा है। तो, 46 के अंत में यह उत्कर्ष 47 में राष्ट्रों के बीच भगवान के उत्कर्ष से जुड़ा हुआ है। यह मंदिर से है कि भगवान की स्तुति पृथ्वी के अंत तक गूँजती है।

भजन 48 श्लोक नौ. सिय्योन, सिय्योन रूपांकन अध्याय 51 तक जारी है। और यही यहाँ दिलचस्प है।

मुझे बस देखने दो, मुझे लगता है कि मुझे ये श्लोक मिल गए हैं। मैं सिथ्योन थीम की निरंतरता दिखाने जा रहा हूँ, न केवल 46 से 48 तक, बल्कि यह उससे आगे भी जारी है। और इसलिए, 51 में, अध्याय 51 के अंत में, डेविड का प्रायश्चित्त भजन, श्लोक 18 में कहता है, अपनी खुशी में, सिथ्योन को समृद्ध बनाओ, यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करो।

और इसलिए आपको बतशेबा के साथ अपने पाप को स्वीकार करने के बाद, डेविड के पश्चाताप भजन के अंत में एक बहुत मजबूत बयान मिलता है। आपको यह कथन यरूशलेम की दीवारों के निर्माण के लिए मिलता है। फिर आप अध्याय 52 पर जाएँ, जो पाप के बारे में और बुरे लोगों और दुश्मनों के बारे में एक प्रकार का वास्तव में नकारात्मक भजन है।

और फिर इसके अंत में, वह सकारात्मक पक्ष की ओर चला जाता है। वह कहता है, मैं परमेश्वर के भवन में फलनेवाले जैतून के पेड़ के समान हूँ। और निस्संदेह, भगवान का वह घर ही मंदिर है।

और फिर भजन 53 वहां आता है, हे कि इस्राएल के लिए उद्धार सिथ्योन से निकलेगा। तो यहाँ फिर से, आपको सिथ्योन भजन पिछले 48 से बाहर निकलकर 51, 52, 53 में जा रहा है, वह मूल भाव, और फिर वास्तव में यहाँ भी 55। तो, 55:14 कहता है कि यह भगवान के घर में जुलूसों को दर्शाता है, जहां, उद्घरण, हम उपासकों के बीच चले, जो त्योहार के समय होगा जब वे ऊपर जाते हैं और वे यरूशलेम तक चढ़ते हैं।

तो, आप देख सकते हैं कि 42 और 43 के प्रश्न का उत्तर, आपका भगवान कहां है, अध्याय 46 से 55 में उत्तर दिया गया है कि भगवान सिथ्योन में है, कि भगवान सिथ्योन में है और उसके उपासक वहां उसकी पूजा करने के लिए जाते हैं, परन्तु वह अन्यजातियों से भी बढ़कर महान् है। और इसलिए, यह वापस चला जाता है। तो, ठीक है, यह स्तोत्र की दूसरी पुस्तक का एक बड़ा हिस्सा है।

एक बार जब सिथ्योन में मंदिर में भगवान का स्थान स्थापित हो जाता है, तो एक ज्ञान स्तोत्र मौत के सामने धन की नपुंसकता को उजागर करता है, क्योंकि अमीर नष्ट हो जाते हैं, जैसे कि भजन 49.12 और 20 में जानवरों की। भजन 50 सिथ्योन के विषय पर लौटता है। 51.50 श्लोक दो, जहां भगवान ने अपनी असत्यता की घोषणा करते हुए स्पष्ट किया कि उन्हें उनके बलिदानों की कोई आवश्यकता नहीं है। उसकी कोई आवश्यकता क्यों नहीं है? भगवान उनका भोजन नहीं खाते, उनका बलिदान भगवान का भोजन नहीं है।

इसके बजाय, उन्होंने कहा, अगर मुझे भोजन चाहिए, तो उन्होंने कहा, मेरे पास एक हजार पहाड़ियों पर मवेशी हैं। आपको वह महान गीत याद है जो चर्चों में गाया जाता था, भजन 50 छंद नौ से 13। बतशेबा के साथ उसके संबंध के बाद डेविड का महान पश्चाताप भजन 51 यह स्वीकार करते हुए स्पष्ट करता है, आप बलिदान से प्रसन्न नहीं होते हैं या मैं इसे वैसे ही लाऊंगा जैसे वह अपना प्रस्तुत करता है ईश्वर के पास आने के लिए एक शर्त के रूप में टूटे और पसे हुए हृदय का बलिदान।

भजन 51 फिर दिखाता है कि कैसे पश्चाताप करने वाले धर्मी अपने पापों को स्वीकार करते हैं, एक नव निर्मित और शुद्ध हृदय से बलिदान चढ़ाते हैं। भजन 51.7 और पद 10। भजन 51 सिंथोन को समृद्ध करने और यरूशलेम की दीवारों के निर्माण के आह्वान के साथ समाप्त होता है, जो अध्याय 46 से 48 में सिंथोन भजनों से जुड़ा हुआ है।

भजन 50 धर्मी को संबोधित करता है। इसके विपरीत, 52 से 53 में डोएग की छवि के माध्यम से दुष्टों का वर्णन किया गया है, एक हत्यारा एदोमी जो अपने धन पर भरोसा करने वालों की व्यर्थता के विषय पर लौट रहा है, भजन 49 श्लोक 20 से जोड़ रहा है और उस मूर्ख को और विकसित कर रहा है जो अपने दिल में कहता है, वहा भगवान नहीं है। भजन 53 और भजन 14 हमने अभी तुलना की थी।

अब एक नया लेख है जो 2017 में स्कैंडिनेवियाई जर्नल ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट में बोथा नाम के एक व्यक्ति द्वारा सामने आया है। लेख मूल रूप से दिखाता है कि 52 से 55 तक कैसे। तो, हम सिंथोन थीम के बारे में बात कर रहे हैं जो सामने आ रही है 51 से 55, लेकिन बोथा ने दिखाया है कि कैसे 52 से 55 एक साथ जुड़े हुए हैं।

और इसलिए, मैं बस उनके कुछ तर्कों पर गौर करना चाहता हूँ। और वह जो करता है वह कहता है कि 52 से 55 इस शब्द मास्किल या निर्देश के एक भजन द्वारा एक साथ जुड़े हुए हैं। और इसलिए, आप देखते हैं कि भजन 52, 53, 54 के शीर्षक कैसे हैं, और मैं 55, हाँ, 55 समान प्रकार की चीज़ों पर विश्वास करता हूँ।

तो इन चार भजनों को वह संगीत के निर्देशक, एक मास्किल या डेविड के निर्देश के एक भजन के लिए एक साथ जोड़ता है जब डोएग एदोमाइट ने अपना गंदा काम किया था। भजन 53, डेविड के मास्किल महलत के अनुसार संगीत निर्देशक का शीर्षक। आप देखते हैं कि संगीत के निर्देशक के लिए ये फिर से एक-दूसरे के समानांतर कैसे हैं, इस बार तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ संगीत के निर्देशक के लिए, डेविड का एक मास्किल, डेविड का एक मास्किल, डेविड का एक मास्किल जब ज़िपाइट्स ने अपना गंदा काम किया।

फिर से संगीत के निर्देशक के लिए, संगीत के निर्देशक, तार वाले वाद्ययंत्रों के साथ संगीत के निर्देशक, डेविड का एक मास्किल। पुनः इनके शीर्षकों में चार बार इन्हें एक साथ बांधते हुए। तो, यह उन चारों, एक साथ बंधे हुए भजनों का एक समूह होने जा रहा है।

ठीक है। अब भजन 52, इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मुझे कुछ और विकसित करने दीजिए। धन और शक्ति पर घमंड और भरोसा करने का विषय भजन 52.7 में प्रकट होता है। उस व्यक्ति को देखें जो ईश्वर की शरण नहीं लेगा, बल्कि प्रचुर धन पर भरोसा करता है और भजन 55 में इसके विपरीत के साथ-साथ धन में भी शरण लेता है।

परन्तु हे परमेश्वर, तू दुष्टों को भ्रष्टाचार के गड़हे में गिरा देगा। खून के प्यासे और धोखेबाज लोग अपने दिन जीवित नहीं रखेंगे। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मुझे तुम पर भरोसा है।

और इसलिए, जो लोग धन पर भरोसा करते हैं बनाम जो लोग भजन 52 छंद 55 में भगवान पर भरोसा करते हैं, उनके बीच विरोधाभास है। फिर दोनों को यिर्मयाह अध्याय नौ छंद 22 से 23 के साथ काफी दिलचस्प रूप से विश्वास, घमंड और धन से जोड़ा जाता है। दोनों हैं भजन 52 से 55 के बीच यिर्मयाह 9 के साथ संबंध बनाना। मुझे लगता है कि यह संबंध बहुत दिलचस्प है और इसे आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

भजन 52 श्लोक दो से चार में जीभ एक खतरनाक हथियार है, यह कहती है, तुम विनाश की साजिश रच रहे हो। हे विश्वासघाती, तेरी जीभ तेज छुरे की नाई तेज है। फिर भजन 55 में, जीभ के साथ भी यही बात है।

उनकी वाणी मक्खन जैसी चिकनी है, फिर भी युद्ध उनके हृदय में है। उसके शब्द तेल से भी अधिक सुखदायक हैं, फिर भी वे एक खींची हुई तलवार हैं। यह यिर्मयाह अध्याय नौ, श्लोक सात से भी जुड़ता है।

तो ऐसा प्रतीत होता है कि इन चार भजनों और यिर्मयाह 9 के बीच कुछ संबंध है। मैं सुझाव दूंगा कि कई भजनों, विशेष रूप से भजन एक और यिर्मयाह 17 के साथ संबंध को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। यिर्मयाह और साल्टर के बीच बड़े संबंध।

भजन 52 और 54 अध्याय 52:9, 9, 54:6 में भगवान के नाम पर अंतिम जोर देकर जुड़े हुए हैं। और भजन 54 और भजन 55 दोनों ही परमेश्वर को सुनने के आह्वान के साथ शुरू होते हैं। 54.2 और 55.1 और 2. मास्किल भजन 52 से 55 की इस पंक्ति के बाद मिकतम शीर्षक भजनों का एक समूह आता है और देखें कि क्या हमें यह यहां मिल गया है। मिकतम 56 से 60 तक, यह इस शब्द मिकतम का उपयोग करता है।

हम वास्तव में नहीं जानते कि मिकतम शब्द का क्या अर्थ है, विश्वास करें या न करें। इसलिए वे इसका अनुवाद नहीं करते. उन्होंने इसे बस पाठ में डाल दिया क्योंकि यह एक मिकतम है।

दूसरे डेविडिक संग्रह में संगीत के निर्देशक, और यह इन मिकतम में भजन 56 से 60 में हैं। तो 52 से 55 निर्देश के लिए मसाकिल हैं। भजन 56 से 60, वे सभी इस शब्द मिकतम से जुड़े हुए हैं, जिसका हम वास्तव में क्या मतलब नहीं जानते हैं।

तो, यह इसे मिकतम कहता है। भजन 63 की ओर आगे बढ़ना शायद अध्याय 42 और 43 में उसकी परेशान और दिव्य अनुपस्थिति का उत्तर है, जो अब स्थानांतरित हो गया है, मैंने तुम्हें अभयारण्य में देखा है। तो, सबसे पहले, ईश्वर की अनुपस्थिति है।

तुम्हारे भगवन कहा हैं? अध्याय 46 से 52 या 53 में वह सियोन की ओर जाता है। और अब 63 में, वह कहता है, मैंने तुम्हें पवित्रस्थान में यह प्रतिज्ञा करते हुए देखा है कि जब तक मैं जीवित हूं, मैं हाथ उठाकर तुम्हारी स्तुति करूंगा। भजन 63 श्लोक दो और श्लोक 13 और निम्नलिखित।

पुस्तक दो के शेष भाग को पढ़े बिना पहले के भजनों में याचिका, विलाप और शिकायत प्रमुख है। जैसे-जैसे कोई अंत के करीब पहुंचता है, भजन 65 से 68 में प्रशंसा के भजन, यहां तक कि भजन के समान। और अब बस दौड़ो और मुझे इसे थोड़ा सा पकड़ने दो।

इसलिए मूल रूप से हमने विलाप, सांप्रदायिक विलाप, हम, हम, हमारे, या व्यक्तिगत विलाप, मैं, मैं, मेरे के भजनों से शुरुआत की। और अब मूलतः पुस्तक के अंत में हमें जो मिला है वह भजन हैं। और इसलिए, 65 से 68 तक भजन हैं।

भजन वहीं होने जा रहे हैं जहां ए और फिर हमने कहा, भजन 71 कमजोर डेविड है, 1 राजा 1। और फिर 71 में कमजोर डेविड के बाद सुलैमान की ताकत आती है। और यह 1 राजा 2 से 3 के समान ही है, जहां अबीशग के साथ कमजोर दाऊद और सुलैमान के राजा बनने और सुलैमान और उसके भाई अदोनियाह के सिंहासन पर बैठने की पूरी स्थिति और वहां होने वाला संघर्ष। परन्तु दाऊद कमजोर था।

सुलैमान की ताकत के प्रति वही कमजोरी पुस्तक 2 के अंत में देखी जाती है। और इसलिए, यह एक दिलचस्प संबंध है। और यह भी, यह संबंध, पुस्तक 2 ईश्वर की अनुपस्थिति और स्तुति के स्थान से दूरी के प्रारंभिक विलाप से बहती है, भजन 42 स्लैश 43, सियोन, ईश्वर का शहर, 46 से 48, ज्ञान तक, अध्याय 49, और फिर भजन 50 और 51 में बलिदानों में डुबकी लगाता है और 52 और 53 में पाप करता है। यह 54 से 64 में 56 और 57 में दयालु भजनों की एक जोड़ी के साथ विलाप करता है, दोनों शुरू होते हैं, मुझ पर दया करो।

और भगवान के लिए प्यास की एक प्रतिध्वनि, भगवान के लिए प्यास का रूपांकन 42 से लिया गया है और फिर 63 से शुरू होता है, पानी की किताबों के बाद हिरण के हांफने की तरह भगवान के लिए प्यास। इसके बाद यह 65 से 68 तक कई भजनों के माध्यम से आगे बढ़ता है। और पुस्तक 2 का समापन भजनहार डेविड, भजन 71, जैसे कि 1 राजा 1 में भजन 72 में जीवंत राजा सुलैमान की कमजोर उम्र से संक्रमण के साथ होता है और यह भी 1 राजा के समान है। 2 और 3. पुस्तक 2, जो कि भजन 42 से लेकर भजन 72 तक है, इस प्रकार समाप्त होती है जो भजन संहिता की कई पुस्तकों की विशेषता है, दोहरी प्रशंसा और दोहरे आमीन के साथ।

इससे यिश्शै के पुत्र दाऊद की प्रार्थना समाप्त होती है। और इसलिए, पुस्तक 2 में एक हलचल है जैसे कि पूरे साल्टर में है। पूरे साल्टर में, वे विलाप को सामने रखते हैं।

और पहली किताब, अध्याय 3 से 41 में बहुत सारे भजन हैं, उनमें से कई डेविडिक विलाप हैं। और फिर भी भजन समाप्त होते हैं, भजन 145 से 150 तक, यह स्तुति के साथ समाप्त होता है। तो, इसकी शुरुआत विलाप से होती है और पूरा भजन स्तुति के साथ समाप्त होता है।

पुस्तक 2 भी ऐसा ही करती है। इसकी शुरुआत इन विलापों से होती है। तुम्हारे भगवन कहा हैं? यह सियोन तक जाता है और फिर पुस्तक 2 के अंत में स्तुति के इन भजनों के साथ समाप्त होता है। और फिर आपके पास डेविड है, डेविड और सोलोमन के बीच यह संक्रमण होता है। और फिर पुस्तक समाप्त होती है, यिश्शै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएँ समाप्त होती हैं।

और फिर पुस्तक एक प्रशंसा और दोहरे आमीन के साथ समाप्त होती है। तो, यह प्रवाह है, प्रवाह की प्रशंसा का विलाप जिसके बारे में हमने बात की है। और इसलिए, मैं बस वापस जाना चाहता हूँ और समीक्षा करना चाहता हूँ कि हमने क्या किया और फिर हम इसे बंद कर देंगे।

हमने यह ध्यान देकर आरंभ किया कि भजन संहिता की पुस्तक को तहिलीम कहा जाता था। और यह तहिलीम हलाल शब्द से आया है, जिसका अर्थ है हललूया, प्रभु की स्तुति। तो, भजन की पुस्तक का शीर्षक हलाल से आया है, जिसका अर्थ है प्रशंसा।

और हमने उस बारे में बात की। हमने स्तोत्र या स्तोत्र की पाँच पुस्तकों के बारे में बात की जो टोरा, पेंटाटेच में मूसा की पाँच पुस्तकों से मेल खाती हैं। और इसलिए, हमारे पास पुस्तक 1, अध्याय 1 से 40, अध्याय 2, 42 से 72 है।

यही वह है जिसका ध्यान हम प्रशंसा पर केंद्रित करने जा रहे हैं। और फिर पुस्तक 3, 73 से 89, पुस्तक 4, 90 से 106, पुस्तक 5 इसे 107 से 150 के साथ समाप्त करती है। डेविड की स्तुति, आमीन और प्रार्थना समाप्त होती है, और स्तुति और आमीन।

और उनमें से प्रत्येक पुस्तक इंगित करती है कि यह समाप्त हो गया है। पुस्तक 2 के शीर्षकों में, हमें दूसरा डेविडिक संग्रह, भजन 51 से 70 मिला है। इसे दूसरा डेविडिक संग्रह कहा जाता है।

पहला डेविडिक संग्रह भजन 3 से 41 है। कोरह के पुत्र अध्याय 42 से 49 में पाए जाते हैं। और यह भजन 71 में कमजोर डेविड के बाद सुलैमान के भजन के साथ समाप्त होता है।

और इसलिए, जिस एलोहिस्टिक स्तोत्र की हमने चर्चा की, वह पुस्तक 1, 4, और 5 में याहवे या भगवान के नाम से भजन 42 से 83 में इष्ट एलोहिम के नाम में बदलाव था। और हमने भजन 14 की तुलना की, मूर्ख ने अपने दिल में भजन 53 से कहा है, जो एक ही बात कहता है, लेकिन एलोहिस्टिक स्तोत्र में नाम यहोवा से बदलकर एलोहिम हो गया है। एलोहिस्टिक स्तोत्र हमारी पुस्तक 2, श्लोक 40, अध्याय 42 से 83 है।

तो उसमें नाम में बदलाव हुआ। पुस्तक की कथा प्रवाह विलाप से लेकर स्तुति और प्रश्न तक है कि ईश्वर हमें सियोन में कहाँ ले जा रहा है और वहाँ से दुनिया के अंत तक कहाँ ले जा रहा है। बोधा लेख में भजन 52 और भजन 53 के बीच की कड़ी मस्किल है, एक हथियार के रूप में जीभ।

और वे तीन भजन एक साथ जुड़ते हैं, चार भजन बहुत अच्छी तरह से एक साथ जुड़ते हैं। अब आज हम इसी बारे में बात करने जा रहे हैं। हमारी अगली प्रस्तुति स्तोत्र की पुस्तक के तीन मुख्य पात्रों का परिचय देगी और विशेष रूप से उन तीन पात्रों पर हमारा ध्यान केंद्रित करेगी और वे स्तोत्र की पुस्तक 2 में कैसे फिट होते हैं।

और सबसे पहले हमारा दुश्मन होगा। और इसलिए, दुश्मन, मूल रूप से दुश्मन ताना देगा और वह फंसाने की कोशिश करेगा। वह लज्जित करेगा, अनादर करेगा, और मारने, नष्ट करने, और नष्ट करने के लिए अपनी जीभ का उपयोग करने का प्रयास करेगा।

स्तोत्र की पुस्तक में शत्रु बहुत मजबूती से रहेगा। और तब भजनहार, भजनकार याचना करेगा क्योंकि वह शत्रु के सामने असहाय महसूस करता है। भजनकार वह याचक बनेगा जो परमेश्वर के पास जाकर कहता है, हे परमेश्वर, मेरी सहायता कर।

तो, आपके सामने वह शत्रु है जिसका सामना भजनकार कर रहा है जिसके साथ यहां दुर्व्यवहार किया जा रहा है। और फिर बड़े पैमाने पर भगवान को एक राजा के रूप में चित्रित किया गया है। और मैं चाहता हूं कि अगली बार जब हम विकसित हों, तो हम इन तीन चीजों को विकसित करें, विशेष रूप से राजा के रूप में भगवान के रूपक पर ध्यान केंद्रित करें।

और वह रूपक भजन संहिता की पुस्तक को समझने की कुंजी है। वास्तव में, वह रूपक पुराने नियम को समझने की कुंजी है। तो, ये तीन किरदार एक बड़ी भूमिका निभाते हैं और हम अगली बार उन तीन किरदारों पर नज़र डालेंगे।

धन्यवाद। हम एक और प्रस्तुति में आपके साथ रहने के लिए उत्सुक हैं।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांड्ट है जो स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र संख्या एक है, स्तोत्र की पुस्तक दो का विहित संदर्भ।